दूहा
वीर सतसई

सूर्यमल्ल मीसण

कवि–परिचै

राजस्थानी काव्य परम्परा री आधुनिक काल री पैली कड़ी रा कवियां में कविवर सूर्यमल्ल मीसण सिरमौड़ कवि है। राजस्थानी काव्य री चारण सैली रा कवि जिका परम्परागत मूल्यां रै साथै–साथै आधुनिक विचारां नै ई आगै बधाया वां कवियां में कविवर सूर्यमल्ल मीसण रौ नांव सिरै रैयौ है। आपनै 'वीर रसावतार' भी कैयौ जावै। कविराज सूर्यमल्ल मीसण रौ जनम काती रा अंधार–पख री अेकम, संवत् 1872 नै बूंदी में हुयौ। आपरा पिता बूंदी रा राजकवि चंडीदान मीसण हा। टाबरपणा सूं ई आप बेजोड़ प्रतिभा रा धणी रैया। दस बरस री उमर आवतां–आवतां आप 'रामरंजाट' नांव रै गद्य ग्रंथ री रचना करी। आपरा गुरु दादूपंथी साधु श्री स्वरूपदासजी हा। साहित्य सिरजण रै साथै–साथै सूर्यमल्ल संगीत रा साधक अर कुसल वीणावादक हा। आप छः ब्याव कर्‌या, पण आपनै संतान सुख नीं मिळ्यौ। आपरा चेलां मांय 'गणेशपुरी' खास रैया जिका 'वीर–विनोद' री रचना करी। कविवर सूर्यमल्ल मीसण री चावी रचनावां इण भांत रैयी है– 1. रामरंजाट 2. वंश भास्कर 3. बलवद् विलास 4. छंदो मयूख 5. वीर–सतसई 6. सतीरासो 7. धातुरूपावलि 8. फुटकर कवित्त। आं सगळी रचनावां मांय सूं कवि री चावी रचना 'वंशभास्कर' ग्रंथ है जिकौ रावराजा रामसिंह री इच्छा सूं लिखीज्यौ। औ ग्रंथ इतियास, भासा अर साहित्य री दीठ सूं घणौ महताऊ ग्रंथ है। इण ग्रंथ री रचना संवत् 1897 में हुई इण विसाल ग्रंथ रौ मूल पाठ लगैटगै ढाई हजार पानां रौ है। साहित्य सिरजण करतां–करतां आप आसाढ़ बदी 11, संवत् 1925 में सुरग सिधाया। भौतिक रूप सूं आज आप भलां ई नीं है, पण आप आपरी रचनावां पाण जुगां लग जीवता रैवैला।

पाठ–परिचै

कविराजा सूर्यमल्ल मीसण री रचनावां मांय सूं अेक चावी रचना 'वीर–सतसई' रैयी है। 'सतसई' रौ अरथ 'सात सौ छंदां' री रचना सूं हुवै, पण आ रचना सात सौ छंदां (दूहां) मांय नीं लिखीजी है। इण मांय 288 दूहा ईज लिखीज्या है, आ रचना पूरी नीं लिखी जा सकी। वीर–सतसई री रचना उण जुग नै देखतां घणी महताऊ गिणी जा सकै, उण बखत भारत में सन् 1857 रै पैले स्वतंत्रता संग्राम री ज्वाला सिळगण लागगी ही। इण रचना में केई ठौड़ इण भांत रा संकेत मिळै है। वीर सतसई में मरजाद भूल्योड़ा वीरां में वीरता जगावण रौ संदेस है, अंगरेजां री बधती ताकत सूं कवि वाकब हा अर उणनैं दबावण रौ संदेस आपरी रचना सूं दियौ। केई विचारक तो आ भी कैवै कै 'वीर–सतसई' पैलड़ै स्वतंत्रता संग्राम रौ 'काव्यमय उद्‌गार' है। इण रचना में आदर्श वीरां रौ चितराम है तो वीर नारियां री प्रेरणा है। इणमें कठैई वीर मां, कठैई वीर पत्नी री हुंकार अर चेतना है, तौ कठैई कायरां री निंदा करण में ई कवि पाछ नीं राखी है। इण रचना सूं आ बात सिद्ध हुवै' कै जे समाज री नारी वीर होवै तौ समाज किणी भांत कायर अर डरपोक नी रैय सकै। वीरां रा आदर्श, वीर नारी री चेतना अर कवि री सीख इण रचना री खासियत कैयी जा सकै। आधुनिक राजस्थानी काव्य परपंरा री इण रचना में सगळै 'दूहा छंद' रौ प्रयोग हुयौ है अर वैणसगाई री छिब खास उल्लेख जोग है।

वीर सतसई

सहणी सबरी हूं सखी, दो उर उलटी दाह।
दूध लजाणौ पूत सम, वलय लजाणौ नाह।।

सूता घर–घर आळसी, वृथा गुमावै बेस।
खग धारा घोड़ां खुरां, दाबै अजका देस।।

हथळेवै री मूठ किण, हाथ विलग्गा माय।
लाखां बातां हेकलौ, चूड़ौ मो न लजाय।।

नहँ पड़ौस कायर नराँ, हेली वास सुहाय।
बळिहारी जिण देसड़ै, माथा मोल बिकाय।।

नागण जाया चीटळा, सीहण जाया साव।
राणी जाया नहँ रुकै, सो कुलवाट सुभाव।।

टोटै सरकाँ भींतड़ा, घातै ऊपर घास।
वारीजै भड़ झूंपड़ाँ, अधपतियाँ आवास।।

घोड़ा घर ढालां पटल, भाला थंभ बणाय।
जे ठाकुर भोगै जमीं, और किसौ अपणाय।।

इळा न देणी आपणी, हालरिया हुलराय।
पूत सिखावै पालणै, मरण बड़ाई माय।।

मणिहारी जा री सखी, अब न हवेली आव।
पीव मुवा घर आविया, विधवा कवण बणाव।।

कायर घर ऊढ़ा कहै, की धव जोड़ै काम।
कण कण संचै कीड़ियाँ, जोवै तीतर जाम।।

अठै सुजस प्रभुता उठै, अवसर मरियां आय।
मरणौ घर रै मांझियां, जम नरकां ले जाय।।

जिण बन भूल न जावता, गैंद गवय गिड़राज।
तिण बन जंबुक ताखड़ा, ऊधम मंडै आज।।

बिण माथै वाढै दळां, पौढै करज उतार।
तिण सूरां रौ नाम ले, भड़ बांधै तरवार।।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

भड़=वीर। ओळगण=गावण वाळा। केहरी=सिंह। गज=हाथी। वाव=गंध। वळय=चूड़ियां। धण=पत्नी। चीटला=नागण रा बच्चा। उर=हिरदै। वलय=चूड़ौ। हेकलौ=अेकलौ। चीटळा=सपोळा। कुळवाट=कुळ परंपरा। सुभाव=स्वभाव। थंभ=थंभा। मुवा=मरियोड़ा। मांझिया=बीच में। वृथा=व्यर्थ। हेली=सखी। सरका=सरकंडा। इळा=पृथ्वी। ऊढ़ा=प्रौढ़ा। धव=पति। बन=वन। गैंद=गैंडौ। जंबुक=सियार। बाढै=काटै। दळां=सेना। भड़=वीर।

सवाल

विकळपाऊ पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. 'वीर सतसई' रा रचनाकार है–

(अ) दुरसा आढा (ब) ईसरदास

(स) सूर्यमल्ल मीसण (द) नरसी भगत

( )

2. सूर्यमल्ल मीसण रौ जनम–स्थान है–
   (अ) जोधपुर (ब) बीकानेर
   (स) बाड़मेर (द) बूंदी
( )

3. कुणसौ ग्रन्थ सूर्यमल्ल मीसण रै रचियोड़ौ नीं है–
   (अ) वंश भास्कर (ब) वीर सतसई
   (स) राधा (द) राम रंजाट
( )

4. सूर्यमल्ल मीसण रा गुरु कुण हा?
   (अ) कबीरदासजी (ब) दादूदयाल
   (स) स्वरूपदासजी (द) रैदासजी
( )

साव छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. सूर्यमल्ल मीसण रौ जनम कठै अर कद होयौ?
2. 'वीर सतसई' किण रस री रचना है?
3. सूर्यमल्ल मीसण वीर सतसई री रचना किण शैली में करी?
4. सूर्यमल्ल रै पिता रौ कांई नाम हौ?

छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. सूर्यमल्ल मीसण रा दो ग्रंथां रा नांव बतावौ।
2. सूर्यमल्ल मीसण रचित 'वीर सतसई' में कित्ता दूहा है?
3. सिंधू राग कुण गावता? इणरौ कांई महत्त्व हौ?
4. ''सो कुळ वाट सुभाव'' में कवि कांई कैवणौ चावै?
5. वीर पत्नी घोड़ै री बडाई किण भांत करी है?

लेखरूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. सूर्यमल्ल मीसण रौ जीवण परिचय देवता थकां साहित्य जगत में इणां रै योगदान रौ खुलासौ करौ।
2. कवि सूर्यमल्ल मीसण वीर सतसई में वीरत्व री व्यंजना किण भांत करी है?
3. 'वीर सतसई' रा पठित छंदां रै आधार माथै राजस्थान री वीर नारी रा गुणां रौ बखाण करौ।
4. नीचै दिरीज्या दूहां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) घोड़ा घर ढालां पटल, भाला थंभ बणाय।
जे ठाकुर भोगै जमीं, और किसौ अपणाय।।

(ब) बिण माथै वाढै दळां, पौढै करज उतार।
तिण सूरां रौ नाम ले, भड़ बांधै तरवार।।

(स) टोटै सरकाँ भींतड़ा, घातै ऊपर घास।
वारीजै भड़ झूंपड़ाँ, अधपतियाँ आवास।।

105

सोरठा
चेतावणी रा चूंगट्या

केसरीसिंह बारहठ

कवि–परिचै

राजस्थानी काव्य परम्परा में वै कवि जिका काव्य सिरजण रै साथै देस रै स्वतंत्रता संग्राम में आपरी महताऊ भूमिका निभायी अर देस रै खातर आपरौ सैं की बलिदान कर दियौ, अैड़ा भारत माता रा सपूतां में राजस्थान रा कवि केसरीसिंह बारहठ रौ नांव खास तौर सूं लियौ जाय सकै। इणां री प्रेरणा सूं आं रौ छोटो भाई अर बेटौ भी आजादी खातर आपरै जीवण नै होम दियौ। कवि केसरीसिंह बारहठ रौ जनम 21 नवम्बर, 1872 नै शाहपुरा (भीलवाड़ा) ठिकाणै रै 'देवखेड़ा' गांव में हुयौ। आपरा पिता किशनसिंह जी बारहठ भी चावा कवि अर इतिहासविद् हा। उण बगत देस में आजादी रौ आंदोलन चालतौ हौ, सो आप आंदोलन में कूद पड़्या। पैली आपरी आस्था अहिंसक आंदोलनां कांनी नीं ही। आप हिंसक आंदोलन रा समरथक रैया। इणी कारण वै 'अभिनव भारत' नांव रै क्रान्तिकारी संगठन सूं जुड़ग्या अर राजस्थान में इण री जड़ां जमावण सारू खूब प्रयास कर्‌या। भारत रै स्वतंत्रता संग्राम में आपरौ पूरौ परिवार लागग्यौ। आपरा छोटा भाई जोरावर सिंह 'हार्डिंग बम कांड' में अपराधी घोसित हुया, पण आपनै कोई पकड़ नीं सक्यौ। आपरौ सपूत प्रतापसिंह बारहठ भी कांतिकारी रैयौ। वो ई वीर हौ, पण उणनै धोखै सूं पकड़ लियौ अर जेळ में कैद कर लियौ। अणूंती जातनावां रै कारण उणरी जेळ में ईज मौत होयगी। अंगरेजी सरकार आपनै ई सन् 1912 में गिरफ्तार कर लियौ। पछै कोटा अर हजारी बाग जेळ में आपनैं राखीज्यौ। आपनै 1919 में जेळ सूं पाछी मुगती मिली। कवि केसरीसिंह आपरै विचारां सूं रजवाड़ां नै ई औ समझावण रौ जतन करता रैया कै अंगरेजां रौ राज घणा दिनां तांई रैवण वाळौ नीं है, इण वास्तै सगळां नै आगै आय'र इण राज नैं हटावण में सैयोग करणौ चाईजै, वै लिख्यौ–

''अवधि अब ओछीह, सोचीजै सह भूपत्यां।
पड़ग़ी पख पोचीह, नीत सलोची नह रखी।
साज्यां बणिकां साज, रजवट वट खोवै रिपु।
रहसी नहीं ओ राज, आज लगां जिण बिध रह्यौ।''

वै कवि रै दायित्व नै नीं भूल्या वै लिख्यौ कै अेक चारण कवि रौ जीव इण दुरगत नै देख घणौ दुख पाय रह्यौ है–

''खत्रवट मांहै खोट, देखै दुख पावै दुसह।
तद चारण चुभती चोट, हिरदै सबदां री हणै।।''

आजादी रा क्रान्तिकारी कवि केसरीसिंह आपरै जीवण रै छैहला दिनां में अंहिसा अन्दोलन रा समरथक बणग्या। 14 अगस्त, 1941 में देस री सेवा करतां थकां औ सेवक आपरी जीवण–यात्रा नै विराम दियौ।

पाठ–परिचै

भारत रै स्वतंत्रता आन्दोलन रै इतिहास में कवि केसरीसिंह बारहठ रा लिख्योड़ा 13 सोरठा 'चेतावणी रा चूंगट्या' रै नाम सूं घणा चावा रैया। अै सोरठा इतिहास नैं अेक नूंवौ मोड़ दियौ। सन् 1903 में दिल्ली में लार्ड कर्जन अेक दरबार रौ आयोजन कर्‌यौ। इणमें भारत रा सगळा राजावां नै दरबार में हाजरी देवण रौ न्यूतौ दिरीज्यौ। मेवाड़ रा महाराणा फतहसिंह ई दिल्ली सारु व्हीर होया। कवि केसरीसिंह बारहठ आ चावता हा कै मेवाड़ री अनमी पाग जिकी मुगलां आगै ई नीं झुकी वा अंगरेजां सांम्ही नीं झुकै, इण वास्तै आप अै सोरठा लिख महाराणा री सेवा में भेज्या। आं सोरठां नै पढ़ दिल्ली पूग्योड़ा महाराणा दरबार में हाजर नीं होया अर पाछा उदयपुर आयग्या। 1903 में अंगरेजां रै विरोध री आ घटना अेतिहासिक रैयी। महाराणा रौ दरबार में नीं जावणौ मेवाड़ री आन–मान–मरजादा नै बचाय लियौ अर मेवाड़ री अनमी पाग जिकी पैली किणी रै सांम्ही नीं झुकी, उण बगत ई नीं झुकी। अै अेतिहासिक सोरठा इण वास्तै महताऊ है।

चेतावणी रा चूंगट्या

पग–पग भम्या पहाड़, धरा छांड राख्यौ धरम।
महारांणा 'र मेवाड़, हिरदै बसिया हिंद रै।।

सकळ चढावै सीस, दांन धरम जिणरौ दिये।
सौ खिताब बगसीस, लेवण किम ललचावसी।।

घण घलिया घमसांण, रांण सदा रहिया निडर।
पेखंतां फुरमांण, हलचल किम फतमल हुवै।।

देखैला हिंदवांण, निज सूरज दिस नेह सूं।
पण तारा परमांण, निरख निसासां नांखसी।।

गिरद गजां घमसांण, नहचै धर माई नहीं।
मावै किम महरांण, गज दो सै रा गिरद में।।

देखे अंजस दीह, मुळकेलौ मन ही मनां।
दंभी गढ दिल्लीह, सीस नमंतां सीसवद।।

औरां नै आसांण, हाकां हरवळ हालणौ।
किम हालै कुळरांण, हरवळ साहां हांकिया।।

अंत बेर आखीह, पातल जे बातां पहल।
रांणां सह राखीह, जिणरी साखी सिरजटा।।

नरियंद सह निजरांण, झुक करसी सरसी जका।
पसरेलौ किम पांण, पांण थकां थारौ फता।।

'कठण जमांनौ' कौल, बांधै नर हीमत बिना।
वीरां हंदौ बोल, पातल सांगै पैखियौ।।

सिर झुकिया सहंसाह, सिंघासण जिण सांमनै
रळणौ पंगत राह, फाबै किम तोनै फता।।

मांण मोद सीसोद, राजनीति बळ राखणौ।
गवरमिंट री गोद, फळ मीठा दीठा फता।।

अब लग सारां आस, रांण रीत कुळ राखसी।
रहौ स्याय सुखरास, अेकलिंग प्रभु आपरै।।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

भमिया=भटकता रैया। फुरमाण=फरमान (हुकम)। गिरद=गरद, खंक, रंजी। धैरौ=नेहचै, पक्कायत। हरवळ=हरावळ, आगीवाण। नरीयंद=नरेन्द्र, राजा। पाण=तरवार, हाथ। निसांसा नाखसी=दुख भरी सांस छोडणी, अफसोस जाहिर करणौ। अंजस=गुमेज, गौरव। दीह=दीरघ, मोटौ। बैर=बगत, समै। आखिह=कैयौ, भाखी। हंदौ=रौ। खिताब=उपाधि, पदवी।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'निजरांण' सबद रौ अरथ है–
   (अ) राणा रौ निजू (ब) निजर आवणौ
   (स) भेंट (द) निजर लागणी
   ( )

2. 'चेतावणी रा चूंगट्या' किण सारू लिखीज्या?
   (अ) महाराणा फतहसिंह (ब) महाराजा गंगासिंह
   (स) महाराजा जोरावरसिंह (द) महाराणा प्रतापसिंह
   ( )

3. 'चेतावणी रा चूंगट्या' रा रचनाकार है–
   (अ) प्रतापसिंह बारहठ (ब) केसरीसिंह बारहठ
   (स) किसनसिंह बारहठ (द) करणीदान बारहठ
   ( )

4. 'हार्डिंग बम कांड' में किणनै अपराधी घोसित करीज्यौ–
   (अ) केसरीसिंह बारहठ (ब) प्रतापसिंह बारहठ
   (स) किसनसिंह बारहठ (द) जोरावरसिंह बारहठ
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. कवि केसरीसिंह बारहठ रौ जलम कठै हुयौ?
2. केसरीसिंह बारहठ क्रान्तिकारियां रै कुणसै संगठण सूं जुड़्या?
3. केसरीसिंह बारहठ रजवाड़ां नै कांई सीख दी?
4. आजादी रै आंदोलन में कवि बारहठ नै कुण–कुणसी जेळां में राखीज्यौ?
5. महाराणा फतेहसिंह दिल्ली दरबार में हाजर क्यूं नीं हुया?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'खिताब' अर 'बखसीस' में कांई फरक हुवै?
2. कवि रै मुजब महाराणा फतहसिंह अर वांरै बडेरां में कांई फरक है?
3. कवि भारत रा दूजा राजावां री तुलना में मेवाड़ रा महाराणावां नै खास क्यूं मान्या है?
4. आं ओळियां में कवि कांई कैवणौ चावै–

(अ) 'पण तारा परमांण, निरख निसांसा नांखसी।''
(ब) 'मान मोद सीसोद, राजनीत बल राखणौ।''

5. 'चेतावणी रा चूंगट्या' में आया वैण–सगाई अलंकार रा दोय दाखला देवौ।
6. 'स्वतंत्रता संग्राम' में केसरीसिंह बारहठ रौ पूरौ परिवार ईज लागग्यौ।'' इण कथन रौ खुलासौ करौ।

लेखरूप पड्उत्तर वाळा सवाल

1. 'चेतावणी रा चूंगट्या' भारतीय इतिहास नै नूंवौ मोड़ दियौ।'' इण कथन रौ खुलासौ करौ।
2. ''केसरीसिंह बारहठ कवि रै सागै क्रान्तिकारी ई हा।'' इण कथन नै ध्यान में राखता थकां केसरसिंह बारहठ रै व्यक्तित्व अर कृतित्व नै समझावौ।
3. 'चेतावणी रा चूंगट्या' रौ सार लिखौ।
4. नीचै दिरीज्या सोरठां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) पग–पग भम्या पहाड़, धरा छांड राख्यौ धरम।
महारांणा 'र मेवाड़, हिरदै बसिया हिंद रै।।

(ब) नरियंद सह निजरांण, झुक करसी सरसी जका।
पसरेलौ किम पांण, पांण थकां थारौ फता।।

109

सोरठा
द्रौपदी–विनय

रामनाथ कविया

कवि–परिचै

आधुनिक राजस्थानी काव्य परम्परा रा चावा कवि रामनाथ कविया रौ जनम चारण जाति री 'कविया' साखा में संवत् 1865 में 'चोखै को बास' गांव में हुयौ। कठैई–कठैई इण गांव रौ नांव 'गुमानपुरौ' ई बतायौ जावै है। आपरै पिताजी रौ नांव ग्यानजी कविया हौ। ग्यानजी आपरी वीरता अर पौरुषता रै कारणै घणा लोक चावा रैया। आपरा दादोसा नरसिंहदास जी कविया ई रणखेतर में ईज प्राण त्यागिया हा अर पड़दादोसा रौ नांव ई घणौ चावौ रैयौ। इण भांत सूरवीरता आपनै कुळ परंपरा सूं मिळी अर शिक्षा–दीक्षा ई उणी भांत हुयी। कवि रामनाथ कविया रै जीवण री महताऊ घटना खुद रै छोटै भाई री खोज करण री रैयी, जिणां नै खोजतां–खोजतां तिजारै पूग्या भाई नै तिजारै रा राजा बळवंतसिंह साथै देख्यौ अर राजा सांम्ही भाई नै मां सूं मिळावण रौ संकळप बतायौ, पण राजाजी इणां री काव्य–प्रतिभा सूं प्रभावित हुय उणां नै ई उठै ईज राख लिया पछै घणी अरदास कर्‌यां फगत छः दिनां सारू मां कनै जावण री आज्ञा दीनी। विदाई री बेळा राजाजी कांनी सूं 'लाख पसाव' अर 'सिंहाली' गांव आपनै भेंट करीज्यौ।

अठीनै अेक कुचक्र में अलवर नरेश विनयसिंह राजा बळवंतसिंह नै मरवा दियौ अर जागीर जब्त करली अर इणरै साथै रामनाथजी कविया रौ गांव ई जब्त कर लियौ, जदकै 'सांसण' गांव कदैई जब्त नीं हुवै। वै कवि री बात नीं मानी। कवि रामनाथ जी इणरौ विरोध कर्‌यौ, पण राजा रै कीं असर नीं हुयौ। राज दरबार अर परिवार में भी इणरौ विरोध हुयौ, पण राजा आपरौ हठ नीं छोड्यौ। इणरै विरोध में कवि रामनाथजी अेक सौ अेक चारणां रै साथै धरणौ दियौ जिकौ इतिहास में घणौ विख्यात हुयौ। कवि दृढ़ रैवतां देवी रौ आह्वान कर्‌यौ। आ बात घणी मानीजै कै देवी रै कोप सूं म्हैल हिलग्या अर राजा डर' र 'सिंहाली' री ठौड 'सटावट' गांव दियौ। इणरै पछै महाराज शिवदान सिंह रा आप संरक्षक बण्या, पण आपरी कठोरता अर करड़ै अनुसासन सूं शिवदानसिंहजी नाराज हुया अर बालिग हुयां आपरै गांव नै जब्त कर आपनै कैद में बंद कर दिया। कैद में रैवतां ईज आप 'द्रौपदी–विनय' री रचना करी, जकी 'करुण बहत्तरी' रै नांव सूं ई चावी है। लारलौ जीवन भक्ति में लगावतां–लगावतां कवि आपरी देह नै संवत् 1935 में छोडी।

कविवर रामनाथ कविया री रचनावां इण भांत रैयी– 1. करणीजी री स्तुति 2. पाबूजी रा सोरठा 3. द्रोपदी–विनय (करुणा बावनी) 4. फुटकर काव्य।

पाठ–परिचै

कन्हैयालाल सहल री संपादित पोथी 'द्रौपदी–विनय' कवि रामनाथ कविया री घणी चावी रचना है। आ रचना 'करुणा बावनी' या 'करुण–बहत्तरी' रै नांव सूं भी जाणीजै। नारी सशक्तिकरण रौ भाव लियां वांरी आ खास रचना रैयी है। इण काव्य री रचना वै जेळ में कैद रैवता थकां करी। कवि रामनाथ कविया महाराजा शिवदान सिंह रै राज री अव्यवस्था रा शिकार हुया। वांरा स्वामी ईज वांनै दुख दिया, इण वास्तै वै अव्यवस्था रौ विरोध कर्‌यौ। कवि आपरै भाव नै द्रौपदी

रै माध्यम सूं सांम्ही लाया। जिण भांत द्रौपदी आपरै पतियां रै कारणै दुख पायी– राजा, मंत्री, सभासद या सभा में बैठा मोटा–मोटा मानवी अर दूजा कोई वीर उणरी सहायता नीं करी। वा खुद आगै आय सगळां नै धिक्कारिया, समाज री विडरूपता माथै करारौ व्यंग्य कर्‌यौ अर द्रौपदी अेक वीर नारी रै रूप में सांम्ही आयी है, जिकी आपरै सैंजोड़ जुग सूं संघर्ष करतां विजय पायी। उणरै संघर्ष में भगवान ई सहायक हुया। कवि कैवै जिकौ खुद संघर्ष करै भगवान उण री सहायता करै।

द्रौपदी–विनय

पति गंध्रप है पाँच, धरतां पग धूजै धरा।
आवै लाज न आँच, धर नख सूं कुचरै धवळ।।

गज नै ग्रहियौ ग्राह, तैं सहाय हुय तारियौ।
बारी मो बैराह, बैठौ व्है वसुदेव रा।।

मिटसी सह मतिमंद, कळंक न मिटसी भरत कुळ।
अंध हिया रा अंध, पूत दुसासण पाल रे।।

रटियौ हरि गजराज, तज खगेस धायौ तठै।
आ कँई देरी आज, करी इती तैं कान्हड़ा।।

लौ या बिरियां लाख, धर थांरी थे ही धणी।
निंदित क्रित हकनाक, कुरुकुळ भूखण मत करौ।।

लड़कापण प्रहलाद, आद अंत कीधौ अवस।
उणरी राखी याद, सिंघनाद कर सांवरा।।

निलजी कैरव नार, के ऊभी मुळक्या करै।
आसी कुटुम्ब उधार, देणा सो लेणा दुरस।।

अबळा बाळक एक, अरज करूं ऊभी अठै।
टाबर ध्रुव री टेक, तैं राखी वसुदेव तण।।

जोवो जेठाणीह, देराणी थैं देखल्यौ।
होवै लज हाणीह, बीती मो तो बीतसी।।

लेवै अबळा लाज, सबळा हुय बैठां सको।
गरढ सभा पर गाज, सुणतां राळौ सांवरा।।

देवकी'र वसुदेव, पख ऊजळ माता–पिता।
जिण कुळ जनम अजेय, सो किम बिसरयो सांवरा।।

द्रौपद हेलौ देह, वेगौ आ वसुदेव रा।
लाज राख जस लेह, लाज गियां व्रद लाजसी।।

ऐ मिल दुसटी आज, पाल अनारी पालटै।
लागै कुळ नै लाज, सांच रखाज्यौ सांवरा।।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

गंध्रप=गंधर्व। आंच=आग (रीस, क्रोध)। धवळ=वीर। पाल=रोक। सह=सारा। या=इणनै हकनाक=नाहक। निलजी=निरलज, बेसरम। ऊभी=खड़ी। दुरसं=ठीक वौ ईज। जोवौ=देखल्यौ। गज=हाथी। ग्रहियौ=पकड़ियौ। बैराह=बोळौ, बहरौ। तठै=बठै। गरड=बूढा। गाज=बिजळी। राळौ=गेरौ, न्हाखौ। व्रद=विरुद। पालटै=पलटै।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. पाल अनारी पालटै' मांय कुणसौ अलंकार है–
   (अ) रूपक (ब) मानवीकरण
   (स) यमक (द) अतिशयोक्ति
   ( )

2. 'सो किम बिसरयौ सांवरा' मांय कुणसौ अलंकार है–
   (अ) वैणसगाई (ब) अतिशयोक्ति
   (स) उपमा (द) स्लेस
   ( )

3. द्रौपदी लाज राखण री अरज किण सूं करी–
   (अ) राम सूं (ब) हनुमान सूं
   (स) क्रिसन सूं (द) दुर्गा सूं
   ( )

4. 'गरढ़ सभा पर गाज' मांय गरड सबद आयौ है–
   (अ) विद्वानां सारू (ब) बूढां सारू
   (स) पांडुवां सारू (द) कौरवां सारू
   ( )

5. महाभारत में 'धरमराज' रै नांव सूं कुण विख्यात हा–
   (अ) दुर्योधन (ब) अर्जुन
   (स) करण (द) युधिष्ठिर
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. रामनाथजी कविया रौ जलम कठै होयौ?
2. 'द्रौपदी–विनय' पोथी दूजै किण नांव सूं प्रसिद्ध है?
3. 'द्रौपदी–विनय' रौ सम्पादन कुण कस्यौ?
4. रामनाथ कविया री किणी दो रचनावां रा नांव लिखौ।

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. कळंक न मिटसी भरतकुळ' में कवि कांई कैवणौ चावै?
2. सोरठा छंद री परिभासा अर उदाहरण लिखौ।
3. द्रौपदी आपरी करुण पुकार किण सूं किण भांत करी?
4. 'टाबर ध्रुव री टेक' ओळी रौ भाव–विस्तार करौ।

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. रामनाथ कविया रै व्यक्तित्व अर कृतित्व रौ वरणन करौ।
2. द्रौपदी–विनय रा पठित छंदां रौ सार लिखौ।

3. 'रामनाथजी रै हिरदै री करुण पुकार ईज द्रौपदी–विनय रै सोरठां मांय परतख हुयी है।''
   इण कथन रौ खुलासौ करौ।
4. द्रौपदी री करुण पुकार में कुण–कुणसी अंतरकथावां आई है? मांड'र लिखौ।
5. नीचै दिरीज्या सोरठां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) पति गंध्रप है पाँच, धरतां पग धूजै धरा।
   आवै लाज न आँच, धर नख सूं कुचरै धवळ।।

(ब) रटियौ हरि गजराज, तज खगेस धायौ तठै।
   आ कँई देरी आज, करी इती तैं कान्हड़ा।।

(स) द्रौपद हेलौ देह, वेगौ आ वसुदेव रा।
   लाज राख जस लेह, लाज गियां व्रद लाजसी।।

दूहा
चतुर चिन्तामणी

बावजी चतुरसिंह

कवि–परिचै

संसार में आध्यात्मिक चेतना जगावण रौ काम कोई साधु–संत ईज करै, औ जरूरी नीं है। गिरस्ती भी वेदां रौ ज्ञान देय सकै, उपनिषदां नै समझा सकै अर गीता री व्याख्या करता थकां मानखै री चेतना नै जगाय उणनै सद्मारग री प्रेरणा देय सकै। औ अबखौ काम कर्‌यौ। मेवाड़ रा संतकवि महाराज चतुरसिंह, जिणां नै सगळा 'बावजी चतुरसिंह' रै नांव सूं पिछाणै है। बावजी चतुरसिंह रौ जनम मेवाड़ रै राजपरिवार सूं जुड्‌या महाराजा संग्राम सिंह (दूजा) रै तीजै बेटै बाघसिंह रै वंस में महाराजा सूरजसिंह, ठिकाणौ करजाली रै पुत्र रै रूप में 9 फरवरी, 1880 नै हुयौ। आपरी माता कृष्ण कंवर हा। आप मेवाड़ महाराणा फतहसिंह रा भतीजा हा। आपरौ ब्याव जयपुर रा छापोली ठिकाणै में हुयौ अर आपरै अेक बेटी ई हुयी, पण जोड़ायत अर बेटी रौ देहावसान बैगौ ईज हुयग्यौ। इण पछै आपरी वृत्ति आध्यात्मिकता कांनी जुड़ग़ी इणांरै व्यक्तित्व माथै आपरै पिता रौ घणौ असर रैयौ, जिका खुद ई उदासीन विरती रा महापुरुस हा। धीरै–धीरै आपरी इच्छा योग शिक्षा लेवण री हुई अर आप नरबदा नदी रै किनारै रैवण वाळा योगी कमल भारतीजी कन्नै गया, पण वै आपनै बाठरड़ा रा योगीराज ठाकुर गुमानसिंह सूं शिक्षा लेवण रौ निर्देश दियौ। आप बाठरड़ा ठिकाणा रै लिछमणपुरा गांव में ठाकुर गुमानसिंह सूं योगशिक्षा लेवण वास्तै आया जिका आपरै साख में काका लागता हा। वै आपरा गुरु बणग्या अर आपनै राजयोग री शिक्षा दी इण सारू आप खुद लिख्यौ है–

पायो नह विसराम, धायो धामो धाम।
घर में ही काका मिळ्या, नरदेही में राम।।

गुरु गुमानसिंह जिका खुद योगी अर महान् कवि हा वै लिछमणपुरा रै 'रामझरोखै' बैठ 'बावजी' नै योग री शिक्षा देवतां लिख्यौ–

''प्रथम अभ्यासो ज्ञान को, ज्ञान भक्ति संग राख,
जानो चतुर आपहू, वो गीता की साख,
हृदय ब्रह्म को भवन है, चातुर श्रुति प्रमांण,
नैन द्वार तै निरख लो, सत–सत कहै गुमांन।।''

इण भांत बावजी चतुरसिंह राजयोग री शिक्षा लीवी अर महान् योगी बणग्या। इणरै साथै–साथै आप केई ग्रंथां री रचना करी। इण रूप में आप समाज में संत, योगी, साधक अर कवि रै रूप में चावा हुयग्या। वै आपरी रचनावां में साधना री बात तौ करी, पण साथै–साथै जन–जन नै अध्यात्म अर आदर्श जीवण री सीख दी। आध्यात्मिक, सामाजिक चेतना जगावता थकां आप जनकवि भी बणग्या। महाराजा चतुरसिंह रा ग्रंथ इण भांत देख्या जा सकै–

1. भगवत् गीता (गंगाजली टीका) 2. परमार्थ विचार 3. योगसूत्र टीका 4. सांख्यतत्त्व टीका 5. सांख्यकारिका टीका 6. मानवमित्र रामचरित्र 7. शेष चरित्र 8. अलख पच्चीसी 9. तूं ही अष्टक 10. अनुभव प्रकास 11. चतुर चिंतामणी 13. महिम्नस्तोत्र (अनुवाद)–चन्द्रशेखराष्टक 14. हनुमान पंचक 15. समान बतीसी 16. चतुरप्रकाश 17. मेवाड़ी प्राइमर 18. बालकां री बातां।

योग–साधना, साहित्य–साधना करतां अर जन–जन नै चेतावता थकां बावजी आपरी देह नै 1 जुलाई, 1929 नै त्याग दी।

पाठ–परिचै

महाराज बावजी चतुरसिंह री रचनावां मांय अेक महताऊ रचना 'चतुर चिन्तामणी' है। आ रचना घणी लोकचावी रैयी है आप इणमें न्यारा–न्यारा विसयां नै आधार बणाय दूहा, सोरठा, पदावली, सवैया मांय आपरा भाव उजागर कस्या है। 'चतुर चिन्तामणी' में गुरु रौ मैतव, विनय, ब्रज महिमा, ज्ञान, बैराग अर चेतावणी रौ भाव है। माताजी री स्तुति, शौर्य रै साथै फुटकर पदां में भी न्यारा–न्यारा विसयां नै आधार बणायौ है। 'चतुर चिंतामणी' में नीति रा जिका दूहा सांम्ही आया है वां दूहां में बावजी रौ गैरौ अनुभव दीसै। यूं लागै, जाणै बावजी लोक नै कितरै सांतरै ढंग सूं समझ्यौ है अर उणी समझ अर अनुभव रै आधार माथै नीति रा दूहा लिख्या है । अै दूहा कोरा दूहा नीं हुय'र नीति रा सूत्र अर आदर्श जीवण रा आधार है जिणरौ अनुसरण कर मिनख अेक महामानव बण सकै।

चतुर चिन्तामणी

धरम–धरम सब एक है, पण बरताव अनेक।
ईश जाणनौ धरम है, जींरौ पंथ विवेक।।

पान युंही परमारथी, देवै ताप बुझाय।
नमै फेर सूळां खमै, जद दूना बण जाय।।

पर घर पग नीं मेलणौ, बिनां मान मनवार।
अंजन आवै देखनै, सिंगल रौ सत्कार।।

काम बड़ौ वौ ही बड़ौ, वृथा बड़ौ आकार।
मेंगळ मोटा दांत रौ, नाना नख रौ ना'र।।

उपजै आपौ आप ही, भाग प्रमांणै लाग।
कोइक पीटै ताळियां, कोइक खेंचै खाग।।

उण डोढी तूं जाव रै, जठै न रोकण हार।
या डोढी किण कांम री, रे तूं कहै गंवार।।

ऊंध सूंध नै छोडनै, लेणौ कांम पछांण।
कर ऊंधौ सूंधौ घड़ौ, तरती भरती दांण।

रेंठ फरै चरख्यौ फरै, पण फरवा में फेर।
वो तो बाढ़ हस्यौ करै, यो छूंतां रो ढेर।।

बढ–बढ कर माथै चढ्यौ, यो पड़ व्हियौ अजोग।
घड़ौ बीखस्यौ देखनै, कहै ठीकरौ लोग।।

कारड तौ कैतौ फरै, हर कींनै हकनाक।
जीं री व्है वींनै कहै, हियै लिफाफौ राख।।

वी भटका भोगै नहीं, ठीक समझलै ठौर।
पग मेल्यां पेलां करै, गेला ऊपर गौर।।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

अंजन=इंजन। खाग=तलवार। मेंगळ=हाथी। ना'र=सिंघ। डोढी=मुख्य दरवाजौ। रेंठ=रहट, अरठ। फरवा में=फिरण में, घूमण में। हियै=हिरदै, काळजै। नख=नाखून।

सवाल

विकळपाऊ पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. बावजी चतुरसिंह रौ जलम स्थान है–
   (अ) मारवाड़ (ब) मेवाड़
   (स) वागड़ (द) ढूंढाड़
   ( )

2. कवि धरम किणनै मान्यौ है–
   (अ) धन कमावणौ (ब) भगवान नै जाणणौ
   (स) मिल'र चालणौ (द) सम्मान पावणौ
   ( )

3. ''ठीक समझलै ठौर'' मांय कुणसौ अलंकार है–
   (अ) मानवीकरण (ब) अनुप्रास
   (स) वैणसगाई (द) यमक
   ( )

4. ग्यान, भक्ति अर नीति रा कवि मानीजै–
   (अ) चन्द्रसिंह बिरकाळी (ब) बावजी चतुरसिंह
   (स) सूर्यमल्ल मीसण (द) गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद'
   ( )

साव छोटा पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. बावजी चतुरसिंह रौ जलम किण घराणै में हुयौ?
2. बावजी चतुरसिंह री चावी रचना कुणसी है?
3. 'गंगाजळी' रौ दूजौ नाम कांई है?
4. बावजी चतुरसिंह रौ साहित्य राजस्थानी री कुणसी बोली में रचीज्यौ?

छोटा पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. बावजी चतुरसिंह री रचनावां रौ मूळ विसय कांई है?
2. कवि रै मुजब परायै घरां कद जावणौ चाईजै?
3. कवि मोटै आकार नै बिरथा क्यूं मान्यौ है?
4. कवि 'कारड' अर 'लिफाफे' में कांई फरक मान्यौ है?

लेखरूप पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. बावजी चतुरसिंह रै जीवण–दरसण नै समझावौ।
2. ''बावजी चतुरसिंह री रचनावां में नीति, भगती अर दरसण रौ अखूट खजानौ भर्‌यौ है।'' पाठ में आयोड़ा दूहां रै आधार माथै इण कथन रौ खुलासौ करौ।
3. नीचै दिरीज्या दूहां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) धरम–धरम सब एक है, पण बरताव अनेक।
ईश जाणनौ धरम है, जींरौ पंथ विवेक।।

(ब) काम बड़ौ वौ ही बड़ौ, वृथा बड़ौ आकार।
मेंगळ म्होटा दांत रौ, नाना नख रौ ना'र।।